National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
E-ISSN: 2455-9040
Received: 11-09-2026, Accepted: 11-10-2026, Published: 26-10-2026
Volume 11, Issue 4, 2026, Page No. 14-21

सहकारी अधिगम द्वारा सामाजिक दक्षता का विकासः माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक अध्ययन

सरिता कुमारी[1], डॉ. आलोक कुमार मिश्रा[2]
[1] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/njmrd.2026.11.4.11087

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना था। विशेष रूप से संचार कौशल, पारस्परिक पर्याप्तता तथा नेतृत्व के विकास का परीक्षण किया गया। अध्ययन में मात्रात्मक अनुसंधान उपागम तथा अर्द्ध–प्रायोगिक पूर्व–परीक्षण–पश्चात्–परीक्षण नियंत्रण समूह अभिकल्प का प्रयोग किया गया। अध्ययन में कक्षा IX के 75 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया जिनमें 36 विद्यार्थी प्रायोगिक तथा 39 विद्यार्थी नियंत्रण समूह में थे। प्रायोगिक समूह को सहकारी अधिगम तथा नियंत्रण समूह को पारंपरिक शिक्षण प्रदान किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मैन–व्हिटनी U परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि संचार कौशल ($U = 383.000$, $p = .001$) तथा पारस्परिक पर्याप्तता ($U = 278.000$, $p < .001$) में दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। इसके विपरीत नेतृत्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($U = 618.000$, $p = .374$)। अतः सहकारी अधिगम सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के संचार कौशल एवं पारस्परिक दक्षता के विकास में प्रभावी पाया गया।

मूल शब्दः सहकारी अधिगम, सामाजिक दक्षता, संचार कौशल, पारस्परिक पर्याप्तता, नेतृत्व, सामाजिक विज्ञान

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं है बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक उपलब्धियों के साथ–साथ सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक दक्षताओं का विकास करना भी है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय विद्यार्थियों को समाज, संस्कृति, लोकतंत्र, नागरिकता, सहयोग, समानता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों से परिचित कराता है। अतः इस विषय के अध्यापन में ऐसी शिक्षण विधियों का प्रयोग आवश्यक है जो विद्यार्थियों के ज्ञान के साथ–साथ उनकी सामाजिक दक्षता का भी विकास कर सकें। सामाजिक दक्षता से अभिप्राय उन क्षमताओं से है जिनके माध्यम से व्यक्ति दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद स्थापित करता है, सहयोग करता है, नेतृत्व करता है, समस्याओं का सामूहिक समाधान खोजता है तथा सामाजिक परिस्थितियों में उचित व्यवहार प्रदर्शित करता है। इसमें संप्रेषण कौशल, पारस्परिक दक्षता, नेतृत्व क्षमता, सहयोगात्मक व्यवहार, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण सम्मिलित होते हैं। वर्तमान वैश्विक एवं प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश में इन सामाजिक कौशलों का विकास विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं व्यावसायिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी अनुभवात्मक अधिगम, सहयोगात्मक अधिगम, सक्रिय सहभागिता तथा 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर विशेष बल दिया है। नीति के अनुसार शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिसमें विद्यार्थी केवल निष्क्रिय श्रोता न रहकर सक्रिय रूप से ज्ञान के निर्माण में भाग लें। इस संदर्भ में सहकारी अधिगम एक प्रभावी शिक्षण उपागम के रूप में उभरकर सामने आया है। सहकारी अधिगम एक ऐसी शिक्षण रणनीति है जिसमें विद्यार्थियों को छोटे–छोटे समूहों में संगठित करके उन्हें साझा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मिलकर कार्य करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इस प्रक्रिया में प्रत्येक सदस्य अपनी तथा समूह की सफलता के लिए उत्तरदायी होता है। समूह चर्चा, विचार–विमर्श, समस्या समाधान, कार्य विभाजन तथा पारस्परिक सहयोग के माध्यम से विद्यार्थी न केवल विषयवस्तु को बेहतर ढंग से सीखते हैं बल्कि उनमें संप्रेषण कौशल, नेतृत्व क्षमता, पारस्परिक संबंध, उत्तरदायित्व तथा सामाजिक समायोजन जैसे गुणों का भी विकास होता है। जॉनसन एवं जॉनसन तथा स्लेविन जैसे शिक्षाविदों ने अपने अध्ययनों में सहकारी अधिगम को शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक कौशलों के विकास के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध किया है। सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति भी सहकारी अधिगम के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि इसमें सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण, ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या, लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ, समूह चर्चा, विचार–विमर्श तथा सहयोगात्मक गतिविधियों का विशेष महत्व होता है। यदि सामाजिक विज्ञान का अध्यापन सहकारी अधिगम के माध्यम से किया जाए तो विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि बढ़ने के साथ–साथ सामाजिक दक्षताओं का भी प्रभावी विकास संभव है।

यद्यपि सहकारी अधिगम पर अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन उपलब्ध हैं तथापि माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विशेषकर सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के विभिन्न आयामों जैसे संप्रेषण कौशल, पारस्परिक दक्षता तथा नेतृत्व कौशल पर इसके प्रभाव से संबंधित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। इस कारण यह आवश्यक हो जाता है कि इस क्षेत्र में अनुभवजन्य शोध किया जाए ताकि सहकारी अधिगम की प्रभावशीलता का वैज्ञानिक परीक्षण किया जा सके। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन ष्सहकारी अधिगम द्वारा सामाजिक दक्षता का विकासरू माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक अध्ययनष शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि सहकारी अधिगम माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता तथा उसके प्रमुख आयामों संप्रेषण कौशल, पारस्परिक दक्षता एवं नेतृत्व कौशल को किस सीमा तक विकसित करने में प्रभावी है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, शिक्षक–शिक्षकों, पाठ्यक्रम

निर्माताओं तथा शिक्षा–नीति निर्माताओं को सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण एवं विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में उपयोगी दिशा प्रदान कर सकते हैं।

संबन्धित साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा किसी भी शोध का महत्वपूर्ण आधार होती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता पूर्व में किए गए अध्ययनों, सिद्धांतों एवं निष्कर्षों का विश्लेषण करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि वर्तमान अध्ययन किस प्रकार पूर्ववर्ती शोधों का विस्तार करता है। प्रस्तुत अध्ययन में सहकारी अधिगम एवं पारंपरिक शिक्षण के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों की अधिगम निष्पत्तियों का तुलनात्मक एवं अनुभवजन्य अध्ययन किया जा रहा है। अतः इस विषय से संबंधित साहित्य को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया है–

जॉनसन एवं जॉनसन (2009) ने सहकारी अधिगम के प्रभावों का अध्ययन करते हुए पाया कि यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों में सहयोग, सकारात्मक पारस्परिक निर्भरता, उत्तरदायित्व तथा सामाजिक कौशलों के विकास में अत्यंत प्रभावी है उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सहकारी अधिगम न केवल शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है बल्कि सामाजिक दक्षता एवं समूह में कार्य करने की क्षमता का भी विकास करता है। केगन (1994) ने सहकारी अधिगम की विभिन्न संरचनाओं का प्रतिपादन किया तथा बताया कि समूह आधारित अधिगम विद्यार्थियों में सक्रिय सहभागिता, समान अवसर तथा पारस्परिक सहयोग की भावना को विकसित करता है। उनके अनुसार यह पद्धति सामाजिक अंतःक्रिया को सुदृढ़ बनाती है। स्लेविन (2014) ने विभिन्न सहकारी अधिगम मॉडलों का विश्लेषण करते हुए पाया कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, समस्या–समाधान क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा सहयोगात्मक व्यवहार में उल्लेखनीय वृद्धि करता है उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि समूह की सफलता व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर आधारित होनी चाहिए। गिलीज (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि सहकारी अधिगम कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता, नेतृत्व क्षमता, संचार कौशल तथा आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करता है उन्होंने सहकारी अधिगम को विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण की प्रभावी रणनीति माना। वाइगोत्स्की (1978) ने सामाजिक–सांस्कृतिक अधिगम सिद्धांत के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि अधिगम एक सामाजिक प्रक्रिया है जो सहयोग एवं सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से अधिक प्रभावी बनती है। उनके अनुसार सहपाठी सहयोग विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पियाजे (1972) ने बताया कि समूह में कार्य करने से विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, सहयोग तथा सामाजिक समायोजन का विकास होता है उनके अनुसार सहयोगात्मक गतिविधियाँ संज्ञानात्मक विकास को गति प्रदान करती हैं। बंडूरा (1977) ने सामाजिक अधिगम सिद्धांत प्रस्तुत करते हुए बताया कि विद्यार्थी अनुकरण, अवलोकन एवं पारस्परिक अंतःक्रिया के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। इस प्रकार सहकारी अधिगम सामाजिक दक्षता के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। ग्रेशम एवं इलियट (2008) ने सामाजिक दक्षता को सहयोग, आत्मनियंत्रण, उत्तरदायित्व, आत्मविश्वास एवं प्रभावी संप्रेषण जैसे व्यवहारों का समुच्चय माना तथा इसके मापन के लिए सामाजिक कौशल सुधार प्रणाली विकसित किया। मेरिल (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता उच्च होती है वे विद्यालयी जीवन में अधिक सफल, आत्मविश्वासी एवं सहयोगी होते हैं। उन्होंने सामाजिक दक्षता को शैक्षणिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक माना। वेंट्जेल (2015) ने स्पष्ट किया कि सामाजिक दक्षता विद्यार्थियों की प्रेरणा, कक्षा सहभागिता तथा शैक्षणिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है उन्होंने सामाजिक संबंधों को अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार माना। एनसीईआरटी (2005) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण को गतिविधि–आधारित, सहयोगात्मक एवं अनुभवात्मक बनाने पर बल दिया गया है जिससे विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सामाजिक कौशलों का विकास हो सके। शिक्षा मंत्रालय (2020) द्वारा जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण, समूह कार्य तथा 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। एनसीईआरटी (2023) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 में विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु सहयोगात्मक, सहभागितापूर्ण एवं दक्षतामूलक शिक्षण को आवश्यक बताया गया है। यूनेस्को (2021) ने अपनी रिपोर्ट में सहयोगात्मक अधिगम को समावेशी शिक्षा, सामाजिक सहभागिता तथा वैश्विक नागरिकता के विकास का प्रभावी माध्यम माना है। ओईसीडी (2019) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि सहयोगात्मक समस्या–समाधान एवं समूह आधारित अधिगम विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल, संप्रेषण क्षमता तथा टीमवर्क को सुदृढ़ करते हैं जो 21वीं सदी के आवश्यक कौशल हैं।

समीक्षा का सार

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों के सामाजिक, संज्ञानात्मक एवं व्यवहारिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिकांश अध्ययनों में सहकारी अधिगम के सकारात्मक प्रभाव शैक्षणिक उपलब्धि, सहयोगात्मक व्यवहार, संप्रेषण कौशल एवं नेतृत्व क्षमता पर पाए गए हैं तथापि, माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता के विकास पर भारतीय संदर्भ में विशेष रूप से केंद्रित अनुभवजन्य अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। यही अंतर वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

प्रस्तुत अध्ययन 'सहकारी अधिगम द्वारा सामाजिक दक्षता का विकासः माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक अध्ययन' शिक्षा के क्षेत्र में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सहकारी अधिगम विद्यार्थियों को सक्रिय सहभागिता, समूह कार्य तथा पारस्परिक सहयोग के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करता है जिससे उनके सामाजिक एवं संप्रेषण कौशल का विकास होता है (जॉनसन एंड जॉनसन, 2009)। इस अध्ययन के परिणाम सहकारी अधिगम की प्रभावशीलता को प्रमाणित करते हैं जिससे सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक विद्यार्थी–केंद्रित, सहभागितापूर्ण एवं अनुभवात्मक बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, उत्तरदायित्व, सहानुभूति, समस्या–समाधान तथा समूह में कार्य करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है। जो सामाजिक दक्षता के प्रमुख आयाम माने जाते हैं (ग्रेशम एवं इलियट, 2008; गिलीज, 2016)। अध्ययन के निष्कर्ष सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति के स्थान पर समूह चर्चा, सहपाठी अधिगम, परियोजना कार्य एवं सहयोगात्मक गतिविधियों जैसी शिक्षण रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। जिससे विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि एवं सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होगी (स्लेविन, 2014)। इसके अतिरिक्त, विद्यालय प्रशासन सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण विकसित करने तथा पाठ्यचर्या में समूह–आधारित गतिविधियों को सम्मिलित करने के लिए इस अध्ययन के निष्कर्षों का उपयोग किया जा सकता है। यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (शिक्षा मंत्रालय, 2020) तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 (एनसीईआरटी, 2023) में वर्णित विद्यार्थी–केंद्रित, अनुभवात्मक एवं सहयोगात्मक अधिगम की अवधारणा को

व्यवहारिक आधार प्रदान करता है। साथ ही, शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में सहकारी अधिगम की रणनीतियों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्मिलित करने तथा भावी शिक्षकों को प्रभावी सहयोगात्मक शिक्षण कौशल विकसित करने में भी यह अध्ययन सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक उपयोगी संदर्भ प्रदान करता हैं। जिससे वे विभिन्न विषयों, शैक्षिक स्तरों एवं भौगोलिक क्षेत्रों में सहकारी अधिगम एवं सामाजिक दक्षता पर आगे अनुसंधान कर सकते। इस प्रकार, यह अध्ययन विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकतांत्रिक मूल्यों, सहयोगात्मक व्यवहार तथा प्रभावी सामाजिक दक्षता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है (वेंटजेल, 2015; कागन, 1994)।

शोध अंतराल

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोधों में सहकारी अधिगम का प्रभाव मुख्यतः शैक्षणिक उपलब्धि, अवधारणा अधिगम, शैक्षणिक अभिप्रेरणा तथा समस्या–समाधान क्षमता पर केंद्रित रहा है। सामाजिक दक्षता पर किए गए अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं विशेषकर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर। उपलब्ध अध्ययनों में सामाजिक दक्षता के विभिन्न आयामों जैसे सहयोग, संप्रेषण कौशल, नेतृत्व, सहानुभूति एवं उत्तरदायित्व का समग्र मूल्यांकन सीमित रूप से किया गया है। इसके अतिरिक्त अधिकांश विदेशी अध्ययनों के निष्कर्ष भारतीय विद्यालयी परिस्थितियों, विशेषकर सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर प्रत्यक्ष रूप से लागू नहीं किए जा सकते। भारतीय संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों पर सहकारी अधिगम के माध्यम से सामाजिक दक्षता के विकास से संबंधित अनुभवजन्य अनुसंधान अत्यंत सीमित हैं। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 के आलोक में सहयोगात्मक अधिगम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने वाले अध्ययन भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं हैं। इन शोध अंतरालों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन "सहकारी अधिगम द्वारा सामाजिक दक्षता का विकासरू माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के संदर्भ में एक अध्ययन" संचालित किया जा रहा है जिससे माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सहकारी अधिगम की प्रभावशीलता का अनुभवजन्य परीक्षण किया जा सके तथा सामाजिक दक्षता के विकास के संबंध में प्रमाण–आधारित निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

मुख्य उद्देश्य

सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।

सहायक उद्देश्य

1. सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम में सार्थक अंतर है।
2. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम में सार्थक अंतर है।
3. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना

1. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि उनके सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी है। बदलते सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश में सहयोग, संप्रेषण, नेतृत्व, सहानुभूति, समस्या–समाधान तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे सामाजिक कौशलों का विकास अत्यंत आवश्यक हो गया है। इन कौशलों के विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं विशेषकर माध्यमिक स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक व्यवहार का निर्माण होता है। सामाजिक विज्ञान विषय विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, नागरिकता, सहयोग एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करने वाला प्रमुख विषय है किन्तु इसका शिक्षण अभी भी अधिकांश विद्यालयों में पारंपरिक व्याख्यान पद्धति पर आधारित है जिससे विद्यार्थियों को सक्रिय सहभागिता एवं समूह में कार्य करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। सहकारी अधिगम एक ऐसी शिक्षण रणनीति है जो विद्यार्थियों को समूह में सीखने, विचारों का आदान–प्रदान करने तथा पारस्परिक सहयोग के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करने के अवसर प्रदान करती है। जॉनसन एवं जॉनसन (2009) तथा स्लेविन (2014) ने अपने अध्ययनों में स्पष्ट किया है कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ–साथ सामाजिक कौशलों एवं सहयोगात्मक व्यवहार का भी विकास करता है। इसी प्रकार गिलीज (2016) ने पाया कि यह शिक्षण विधि विद्यार्थियों की सहभागिता, नेतृत्व क्षमता एवं संप्रेषण कौशल को सुदृढ़ करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (शिक्षा मंत्रालय, 2020) तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 (एनसीईआरटी, 2023) भी सहयोगात्मक एवं विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देती हैं। यद्यपि सहकारी अधिगम पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं फिर भी माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों में सामाजिक दक्षता के विकास पर इसके प्रभाव से संबंधित भारतीय संदर्भ में शोध अपेक्षाकृत सीमित हैं। विशेष रूप से सहयोग, नेतृत्व, संप्रेषण, सहानुभूति एवं उत्तरदायित्व जैसे सामाजिक दक्षता के आयामों पर केंद्रित अध्ययन पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन इस शोध–अंतराल को पूरा करने का प्रयास करेगा तथा यह स्पष्ट करेगा कि सहकारी अधिगम सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के विकास में किस सीमा तक प्रभावी है। इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों, पाठ्यचर्या निर्माताओं एवं शिक्षा नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे तथा सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण एवं विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज की शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक दक्षताओं का विकास करना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, नागरिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोग तथा सहिष्णुता जैसी मान्यताओं के विकास का आधार प्रदान करता है। ऐसे में सहकारी अधिगम एक प्रभावी शिक्षण रणनीति के रूप में विद्यार्थियों को समूह में सीखने, विचारों का आदान–प्रदान करने, समस्याओं का सामूहिक समाधान खोजने तथा सामाजिक अंतः क्रिया के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करता है। जॉनसन एवं जॉनसन (2009) के अनुसार सहकारी अधिगम विद्यार्थियों में सकारात्मक पारस्परिक निर्भरता, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा सामाजिक कौशलों का विकास करता है। इसी प्रकार स्लेविन (2014) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि सहकारी अधिगम शैक्षणिक उपलब्धि के साथ–साथ सहयोगात्मक व्यवहार एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल को भी विकसित करता है।

यह अध्ययन सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण विधियों के स्थान पर सहकारी अधिगम आधारित शिक्षण रणनीतियों को अपनाने हेतु प्रेरित करता है। जिससे कक्षा शिक्षण अधिक सहभागितापूर्ण, विद्यार्थी–केंद्रित एवं प्रभावी बन सके। गिलीज (2016) के अनुसार सहकारी अधिगम विद्यार्थियों की सहभागिता, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक अंतः क्रिया को सुदृढ़ करता है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों, विद्यालय प्रशासकों तथा पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए भी उपयोगी है क्योंकि इनके आधार पर सामाजिक दक्षता के विकास को बढ़ावा देने वाली शिक्षण रणनीतियों एवं गतिविधियों का विकास किया जा सकता है। साथ ही, यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (शिक्षा मंत्रालय, 2020) तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023 (एनसीईआरटी, 2023) में वर्णित विद्यार्थी–केंद्रित, सहयोगात्मक एवं अनुभवात्मक शिक्षण की अवधारणाओं को व्यवहारिक आधार प्रदान करता है। भारतीय संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर सहकारी अधिगम के प्रभाव से संबंधित अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं; अतः प्रस्तुत शोध इस शोध–अंतराल की पूर्ति करता है तथा भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सिद्ध करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, सामाजिक दक्षता के विकास तथा उत्तरदायी एवं सहयोगी नागरिकों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित शोध प्रविधि का चयन किया गया है। इस अध्याय में शोध की रूपरेखा, अनुसंधान अभिकल्प, जनसंख्या, प्रतिदर्श, उपकरण, प्रक्रिया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण का वर्णन किया गया है।

अनुसंधान उपागम

प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक अनुसंधान उपागम का उपयोग किया गया हैं।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में प्रायोगिक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया हैं।

शोध अभिकल्प

इस अध्ययन में अर्द्ध–प्रायोगिक पूर्व–परीक्षण–पश्चात्–परीक्षण नियंत्रण समूह अभिकल्प का प्रयोग किया जाएगा।

पारंपरिक शिक्षण

तालिका 1: पूर्व–परीक्षण–पश्चात्–परीक्षण का विवरण

समूह	पूर्व परीक्षण	उपचार	पश्चात् परीक्षण
प्रायोगिक समूह	O_1	X (सहकारी अधिगम)	O_2
नियंत्रण समूह	O_3	C (पारंपरिक शिक्षण)	O_4

जहाँ—

- O_1 एवं O_3 त्र पूर्व परीक्षण
- X = एवं सहकारी अधिगम आधारित शिक्षण
- C = पारंपरिक शिक्षण
- O_2 एवं O_4 = पश्चात् परीक्षण

अध्ययन के चर

तालिका 2: चरों का विवरण

चर का प्रकार	चर	विवरण
स्वतंत्र चर	शिक्षण तकनीक	अध्ययन में प्रयुक्त शिक्षण विधि, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर ज्ञात किया गया है।
आश्रित चर	सामाजिक दक्षता	सहकारी अधिगम के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में विकसित होने वाली सामाजिक दक्षता, जिसका मापन सामाजिक दक्षता मापनी द्वारा किया गया है।
नियंत्रित चर	कक्षा	सभी प्रतिभागी एक ही कक्षा (जैसे कक्षा IX) के होंगे।
	आयु	विद्यार्थियों की आयु लगभग समान सीमा में रखी गई है।
	सामाजिक विज्ञान विषय	सभी विद्यार्थियों को समान सामाजिक विज्ञान विषय की विषय–वस्तु पढ़ाई गई है।
	शिक्षण अवधि	दोनों समूहों के लिए शिक्षण अवधि एवं समय समान रखा गया है।
	विद्यालयी वातावरण	अध्ययन के दौरान विद्यालयी वातावरण एवं उपलब्ध सुविधाओं को यथासंभव समान रखा गया है।

जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा IX के सामाजिक विज्ञान के 75 विद्यार्थियों को लिया गया हैं।

प्रतिदर्श

अध्ययन हेतु दो माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि का उपयोग किया गया हैं।

समूह

तालिका 3: प्रतिदर्शों का विवरण

समूह	विद्यार्थियों की संख्या
प्रायोगिक समूह	36
नियंत्रण समूह	39
कुल	75

प्रतिचयन विधि (Sampling Technique):

- विद्यालय चयन – उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- विद्यार्थियों का चयन – उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन

परिणामों की चर्चा एवं विश्लेषण

सामाजिक दक्षता विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से संवाद स्थापित करने, सकारात्मक पारस्परिक संबंध विकसित करने तथा सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश में सक्रिय रूप से सहभागिता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अनुभाग में सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक का सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के तीन प्रमुख आयामों, अर्थात् संचार कौशल, पारस्परिक पर्याप्तता तथा नेतृत्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूहों के मध्य अंतर का निर्धारण करने के लिए मैन–व्हिटनी यू परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस विश्लेषण में दोनों समूहों के माध्य रैंकों की तुलना की गई तथा यह निर्धारित किया गया कि प्राप्त अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है या नहीं। इसके माध्यम से सामाजिक दक्षता के इन आयामों के विकास में सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया।

उद्देश्य 1 सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 1 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना 1 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4: रैंक

चर	समूह का प्रकार	संख्या	माध्य रैंक	रैंकों का योग
संचार कौशल	नियंत्रण समूह	39	29.82	1163.00
	प्रायोगिक समूह	36	46.86	1687.00
	कुल	75		

तालिका 5: परीक्षण सांख्यिकी

परीक्षण सांख्यिकी	
मैन–व्हिटनी यू	383.000
विल्कॉक्सनडब्ल्यू	1163.000
Z मान	−3.383
द्विपाशीय सार्थकता स्तर	.001

तालिका 6: संचार कौशल के अनुसार माध्य रैंक, N तथा मैन–व्हिटनी यू मान

चर	समूह का प्रकार	माध्य रैंक	संख्या	मैन–व्हिटनी यू	सार्थकता
संचार कौशल	नियंत्रण समूह	29.82	39	383.000	$p < 0.05$
	प्रायोगिक समूह	46.86	36		

व्याख्या

सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल में अंतर की सार्थकता का परीक्षण करने के लिए मैन–व्हिटनी यू परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसके परिणाम तालिका 4, 5 एवं 6 में प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि प्रायोगिक समूह का माध्य रैंक (46–86), नियंत्रण समूह के माध्य रैंक (29–82) से अधिक है। यह इंगित करता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों का संचार कौशल, नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक विकसित है।

आगे, तालिका 5 से ज्ञात होता है कि मैन–व्हिटनी यू परीक्षण मान 383-000 तथा Z मान – 3-383 है। प्राप्त प्रायिकता मान ($p = .001$), 0-05 के सार्थकता स्तर से कम है। अतः प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों के संचार कौशल में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है।

अतः तालिका 6 में शून्य परिकल्पना H_{01}, अर्थात् "सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकार की जाती है।

प्रायोगिक समूह के उच्च माध्य रैंक से यह संकेत मिलता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक ने विद्यार्थियों को अपने साथियों के साथ परस्पर संवाद स्थापित करने, समूह चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने, विचारों का आदान–प्रदान करने, अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने, दूसरों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनने तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान सहयोगात्मक रूप से कार्य करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए। इस प्रकार के सहकारी अधिगम अनुभवों ने विद्यार्थियों की प्रभावी एवं आत्मविश्वासपूर्ण संचार क्षमता का विकास किया जिसके परिणामस्वरूप उनके संचार कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

यह निष्कर्ष सुल्ताना, शाकुर एवं कौसर (2024) के अध्ययन के अनुरूप है। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों के संचार कौशल, सामाजिक अंतः क्रिया, कक्षा सहभागिता तथा सहयोगात्मक व्यवहार में महत्वपूर्ण वृद्धि करता है। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों को विचारों के आदान–प्रदान तथा प्रभावी संचार के लिए सार्थक अवसर प्रदान करता है जिससे उनके संचार कौशल एवं समग्र सामाजिक दक्षता का विकास होता है।

अतः शून्य परिकल्पना H_{01} अस्वीकार तथा शोध परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इस आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक का सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के संचार कौशल पर महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 2 सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 2 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना 2 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 7: रैंक

चर	समूह का प्रकार	संख्या	माध्य रैंक	रैंकों का योग
पारस्परिक पर्याप्तता	नियंत्रण समूह	39	27.13	1058.00
	प्रायोगिक समूह	36	49.78	1792.00
	कुल	75		

तालिका 8: परीक्षण सांख्यिकी

परीक्षण सांख्यिकी	
मैन–व्हिटनी यू	278.000
विल्कॉक्सनडब्ल्यू	1058.000
Z मान	–4.49
द्विपाशीय सार्थकता स्तर	< .001

तालिका 9: पारस्परिक पर्याप्तता के अनुसार माध्य रैंक, N तथा मैन–व्हिटनी यू मान

चर	समूह का प्रकार	माध्य रैंक	संख्या	मैन–व्हिटनी यू	सार्थकता
पारस्परिक पर्याप्तता	नियंत्रण समूह	27.13	39	278.000	p < .05
	प्रायोगिक समूह	49.78	36		

व्याख्या

सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के पारस्परिक पर्याप्तता में अंतर की सार्थकता का परीक्षण करने के लिए मैन–व्हिटनी यू परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसके परिणाम तालिका 7, 8 एवं 9 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 7 से स्पष्ट होता है कि प्रायोगिक समूह का माध्य रैंक (49.78), नियंत्रण समूह के माध्य रैंक (27.13) की तुलना में काफी अधिक है। यह इंगित करता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की पारस्परिक पर्याप्तता नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक विकसित है।

आगे, तालिका 8 से ज्ञात होता है कि प्राप्त मैन–व्हिटनी यू मान 278.000 तथा Z मान लगभग –4.49 है। प्राप्त प्रायिकता मान (च < .001), 0.05 के सार्थकता स्तर से कम है। अतः प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की पारस्परिक पर्याप्तता में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यधिक सार्थक है।

तालिका 9 में प्रस्तुत सारांश भी दर्शाता है कि प्राप्त मैन–व्हिटनी यू मान (278.000), 0.05 के स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_{o}2$, अर्थात् "सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता की पारस्परिक पर्याप्तता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकार की जाती है। इस प्रकार शोध परिकल्पना समर्थित होती है।

प्रायोगिक समूह के उच्च माध्य रैंक से यह संकेत मिलता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक ने विद्यार्थियों को अपने साथियों के साथ प्रभावी अंतः क्रिया करने, सकारात्मक संबंध विकसित करने, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने तथा समूह में प्रभावी ढंग से कार्य करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए। इन सहयोगात्मक अधिगम अनुभवों ने विद्यार्थियों के पारस्परिक कौशल तथा सामाजिक समायोजन को सुदृढ़ किया जिसके परिणामस्वरूप उनकी पारस्परिक पर्याप्तता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

यह निष्कर्ष (टोमोरी, 2020) के अध्ययन के अनुरूप है। उनके अध्ययन में पाया गया कि सहकारी अधिगम विधियाँ विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता में महत्वपूर्ण वृद्धि करती हैं तथा टीमवर्क, संचार, सहयोग, उत्तरदायित्व एवं पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ बनाती हैं। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों को सार्थक सामाजिक अंतः क्रिया के अवसर प्रदान करता है तथा उन्हें समूह में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए तैयार करता है जिससे उनके पारस्परिक कौशल एवं समग्र सामाजिक दक्षता का विकास होता है।

अतः शून्य परिकल्पना H_{o2} अस्वीकार तथा शोध परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इस आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक का सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता की पारस्परिक पर्याप्तता पर महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 3 सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम पर सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना 3 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में सार्थक अंतर है।

शून्य परिकल्पना 3 सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 10: रैंक

चर	समूह का प्रकार	संख्या	माध्य रैंक	रैंकों का योग
नेतृत्व	नियंत्रण समूह	39	35.85	1398.00
	प्रायोगिक समूह	36	40.33	1452.00
	कुल	75	—	—

तालिका 11: परीक्षण सांख्यिकी

परीक्षण सांख्यिकी	नेतृत्व
मैन–व्हिटनी यू	618.000
विल्कॉक्सन डब्ल्यू	1398.000
Z मान	–0.89
द्विपाशीय सार्थकता स्तर	.374

तालिका 12: नेतृत्व के अनुसार माध्य रैंक, N तथा मैन–व्हिटनी यू मान

चर	समूह का प्रकार	माध्य रैंक	संख्या	चर	समूह का प्रकार
नेतृत्व	नियंत्रण समूह	35.85	39	618.000	p > .05
	प्रायोगिक समूह	40.33	36		

व्याख्या

सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व में अंतर की सार्थकता का परीक्षण करने के लिए मैन–व्हिटनी यू परीक्षण का प्रयोग किया गया। इसके परिणाम तालिका 10, 11 एवं 12 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 10 से स्पष्ट होता है कि प्रायोगिक समूह का माध्य रैंक (40.33), नियंत्रण समूह के माध्य रैंक (35.85) से थोड़ा अधिक है। यह इंगित करता है कि प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के नेतृत्व के अंक नियंत्रण समूह की तुलना में कुछ अधिक हैं किन्तु दोनों समूहों के मध्य यह अंतर अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 11 से ज्ञात होता है कि प्राप्त मैन–व्हिटनी यू मान 618.000 तथा Z मान लगभग –0.89 है। प्राप्त प्रायिकता मान (p = .374), 0.05 के सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों के नेतृत्व में पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।

तालिका 12 में प्रस्तुत सारांश भी दर्शाता है कि प्राप्त मैन–व्हिटनी यू मान (618.000), 0.05 के स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना $H_{o}3$, अर्थात् सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकार की जाती है। फलस्वरूप शोध परिकल्पना समर्थित नहीं होती है।

यद्यपि प्रायोगिक समूह का माध्य रैंक नियंत्रण समूह की तुलना में कुछ अधिक है तथापि यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। इससे संकेत मिलता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक वर्तमान अध्ययन में विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार उत्पन्न नहीं कर

सकी। इसका एक संभावित कारण यह हो सकता है कि नेतृत्व गुणों का विकास उत्तरदायित्व ग्रहण करने, साथियों का मार्गदर्शन करने, समूह गतिविधियों का समन्वय करने तथा निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता जैसे अवसरों की निरंतर एवं दीर्घकालिक उपलब्धता पर निर्भर करता है। यद्यपि सहकारी अधिगम ऐसी परिस्थितियाँ उपलब्ध कराता है किन्तु इस अध्ययन में हस्तक्षेप की अवधि अथवा उसकी प्रकृति इतनी पर्याप्त नहीं रही होगी दोनों समूहों के नेतृत्व स्तर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर उत्पन्न हो सके। वर्तमान अध्ययन का यह निष्कर्ष जाट एवं जहागीरदार (जाट एवं जहागीरदार, 2023) के अध्ययन से भिन्न है। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहयोग, संचार तथा सकारात्मक सहपाठी संबंधों को विकसित करता है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों को साझा अधिगम गतिविधियों तथा समूह–आधारित निर्णय–निर्माण में सक्रिय रूप से सम्मिलित किया जाता है। दोनों अध्ययनों के निष्कर्षों में यह भिन्नता प्रतिदर्श की विशेषताओं, हस्तक्षेप की अवधि, सहकारी अधिगम रणनीतियों के क्रियान्वयन, शोध परिवेश अथवा नेतृत्व के मापन की विधि में अंतर के कारण हो सकती है।

अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा शोध परिकल्पना समर्थित नहीं होती है। इस आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान के प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के नेतृत्व आयाम में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक का सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के विभिन्न आयामों पर भिन्न–भिन्न स्तरों पर प्रभाव पड़ा। अध्ययन में सामाजिक दक्षता के तीन प्रमुख आयामों संचार कौशल, पारस्परिक पर्याप्तता तथा नेतृत्व का परीक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि संचार कौशल तथा पारस्परिक पर्याप्तता के संदर्भ में प्रायोगिक एवं नियंत्रण समूह के विद्यार्थियों के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों का माध्य रैंक नियंत्रण समूह की अपेक्षा अधिक था जिससे यह सिद्ध हुआ कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक ने विद्यार्थियों के प्रभावी संचार, विचारों के आदान–प्रदान, सहयोगात्मक सहभागिता, सामाजिक अंतः क्रिया तथा सकारात्मक पारस्परिक संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन दोनों आयामों में शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं तथा शोध परिकल्पनाएँ स्वीकार की गईं। दूसरी ओर नेतृत्व आयाम में प्रायोगिक समूह का प्रदर्शन नियंत्रण समूह से कुछ बेहतर होने के बावजूद दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं था। परिणामस्वरूप नेतृत्व से संबंधित शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई। इससे यह स्पष्ट होता है कि सहकारी अधिगम विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल के विकास की दिशा में सकारात्मक प्रवृत्ति तो उत्पन्न करता है किन्तु वर्तमान अध्ययन की अवधि एवं परिस्थितियों में यह प्रभाव सांख्यिकीय रूप से पर्याप्त सिद्ध नहीं हैं। समग्र रूप से अध्ययन के निष्कर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के विशेषकर संचार कौशल एवं पारस्परिक पर्याप्तता के विकास के लिए एक प्रभावी एवं उपयोगी शिक्षण उपागम है।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि केवल विषयगत उपलब्धि ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक एवं व्यवहारिक विकास के लिए भी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सहकारी अधिगम को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इस तकनीक के प्रभावी उपयोग से विद्यार्थियों में सहयोग, उत्तरदायित्व, सक्रिय सहभागिता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक समायोजन जैसी आवश्यक जीवन–कौशलों का विकास किया जा सकता है। इसलिए शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों तथा पाठ्यक्रम निर्माताओं को चाहिए कि वे कक्षा शिक्षण में सहकारी अधिगम आधारित गतिविधियों को अधिकाधिक सम्मिलित करें। इस प्रकार अध्ययन यह निष्कर्ष स्थापित करता है कि सहकारी अधिगम शिक्षण तकनीक विद्यार्थियों के समग्र सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने वाली एक प्रभावशाली छात्र–केंद्रित एवं व्यवहारिक शिक्षण पद्धति है।

संदर्भ सुची

1. ओईसीडी. (2019). ओईसीडी फ्यूचर ऑफ एजुकेशन एंड स्किल्स 2030: ओईसीडी लर्निंग कम्पास 2030।, संकल्पना नोट्स की एक श्रृंखला. ओईसीडी।
2. केगन, एस. (1994). सहकारी अधिगम. केगन पब्लिशिंग।
3. कोठारी, सी. आर. (2019) शोध पद्धतिः विधियाँ एवं तकनीकें (द्वितीय हिंदी संस्करण). न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
4. गिलीज, आर. एम. (2016). सहकारी अधिगमः अनुसंधान एवं व्यवहार की समीक्षा। ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 41(3), 39–54. https://doi.org/10.14221/ajte.2016v41n3-3
5. गुप्ता, एस. पी. (2019). सांख्यिकीय विधियाँ. सुल्तान चन्द एंड संस।
6. ग्रेशम, एफ. एम., एवं इलियट, एस. एन. (2008). सामाजिक कौशल सुधार प्रणाली (SSIS) रेटिंग स्केल. पियर्सन असेसमेंट्स।
7. चौबे, एस. पी. (2015). अनुसंधान पद्धति एवं सांख्यिकी. अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
8. जाट, वी. एस., एवं जहागीरदार, डी. (2023)। सहकारी अधिगम परिवेशों में सामाजिक कौशल, शैक्षणिक उपलब्धि एवं सहकर्मी संबंधों की अंतःक्रियाः एक गहन समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 11(3), 2975–2984A https://doi-org/10-25215/1103-28
9. जॉनसन, डी. डब्ल्यू., एवं जॉनसन, आर. टी. (2017). जॉइनिंग टुगेदरः समूह सिद्धांत एवं समूह कौशल (12वाँ संस्करण). पियर्सन।
10. जॉयस, बी., वील, एम., एवं कैलहून, ई. (2015). शिक्षण के प्रतिमान (9वाँ संस्करण). पियर्सन।
11. पाण्डेय, के. पी. (2018). शोध पद्धति. विश्वभारती पब्लिकेशन्स।
12. पियाजे, जे. (1972). बालक का मनोविज्ञान. बेसिक बुक्स।
13. बंडूरा, ए. (1977). सामाजिक अधिगम सिद्धांत . प्रेंटिस–हॉल।
14. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान, जे. वी. (2006). शैक्षिक अनुसंधान. प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।
15. भटनागर, आर. पी. (2016). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
16. मेरिल, एम. डी. (2002). निर्देश के प्रथम सिद्धांत. शैक्षिक प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास, 50 (3), 43–59। https://doi-org/10-1007/BF02505024
17. यूनेस्को. (2021). हमारे भविष्य की पुनर्कल्पनाः शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबंध. यूनेस्को।
18. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2023). स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ–एसई 2023). एनसीईआरटी।
19. वर्मा, जी. के., एवं बियर्ड, आर. एम. (1981). शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
20. वाइगोत्स्की, एल. एस. (1978). समाज में मनरू उच्च मानसिक प्रक्रियाओं का विकास. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

21. वेंटजेल, के. आर. (2015). विद्यालयी संदर्भों में समाजीकरण. जे. ई. ग्रुसेक एवं पी. डी. हेस्टिंग्स (संपा.), समाजीकरण की पुस्तिकाः सिद्धांत एवं अनुसंधान (द्वितीय संस्करण, पृ. 251–275). गिलफोर्ड प्रेस।
22. शर्मा, आर. ए. (2019). शैक्षिक अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो।
23. शर्मा, बी. ए., एवं शर्मा, आर. सी. (2017). शोध पद्धति. अटलांटिक पब्लिशर्स।
24. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार https://MCY;wMCY;wMCY;w-education-gov-in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0-pdf
25. सिंह, ए. के. (2017). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ. मोतीलाल बनारसीदास।
26. स्लेविन, आर. ई. (2015). सहकारी अधिगमरू सिद्धांत, अनुसंधान एवं व्यवहार. एलिन एंड बेकन।
27. हैटी, जे. (2009). दृश्य अधिगमः शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित 800 से अधिक मेटा–विश्लेषणों का समेकित अध्ययन. रूटलेज।